

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों (DIETs) द्वारा आयोजित सेवाकालीन अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का समीक्षात्मक अध्ययन

विपिन कुमार सैनी¹, डा. रेनू यादव²

¹शोध छात्र, शिक्षा विभाग, हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद।

²एसोसिएट प्रोफेसर एवं प्रभारी, शिक्षा विभाग, हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद।

Email: vksaini1920@gmail.com



Received 25 July 2026

Accepted 01 August 2026

Published 03 August 2026

Corresponding Author:

विपिन कुमार सैनी

Email: vksaini1920@gmail.com

Doi: <https://doi.org/10.64880/ijeagr.v1i3.04>

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sector.

Copyright: © 2026 The Author(s).



This is an open access article under the [Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/).

OPEN  ACCESS

सारांश

शिक्षा मानव समाज की उन्नति का सबसे महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षा मनुष्य के व्यक्तिगत विकास का माध्यम है, साथ ही सामाजिक प्रगति और समृद्धि में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्राचीन काल से ही सीखने-सिखाने की इस प्रक्रिया को समाज में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है क्योंकि यह मनुष्य के अज्ञानता के अंधकार को दूर करती है। अध्यापन प्रक्रिया का प्रमुख संचालक अध्यापक होता है जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक होता है। अध्यापक विद्यार्थियों के लिए सुविधाप्रदाता, सुगमकर्ता, चरित्र निर्माता एवं मार्गदर्शक की भूमिका का निर्वहन करता है। वह विद्यार्थियों में जिज्ञासु प्रवृत्ति जागृत करते हैं, उनमें प्रश्न पूछने की क्षमता विकसित करते हैं तथा जीवन मूल्यों को भी सीखाते हैं। इस प्रकार अध्यापक एक बेहतर समाज का निर्माण करते हैं। अध्यापकों की कमी तथा उनमें किसी प्रकार की गुणवत्ता का अभाव हो तो यह समाज के लिए हानिकारक होता है। अध्यापकों में विभिन्न गुण तथा योग्यताएं होती हैं जैसे- शिक्षण अभिक्षमता, शिक्षण अभिवृत्ति, व्यावसायिक प्रतिबद्धता, शैक्षिक तकनीकी ज्ञान, बाल मनोविज्ञान एवं शिक्षाशास्त्र का ज्ञान और कक्षा कक्ष शिक्षण शैली आदि सम्मिलित होती है। अध्यापकों की इन्हीं गुणवत्ता में सुधार के लिए संचालित सेवाकालीन अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का भी आकलन किया जाना चाहिए जिससे यह ज्ञात हो सके कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम अध्यापकों की गुणवत्ता में वांछनीय परिमार्जन लाने में कितने सहायक हैं।

संकेत शब्द : DIETs, सेवाकालीन अध्यापक प्रशिक्षण, प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापक।

प्रस्तावना –

शिक्षा देश की उन्नति का आधार स्तंभ होती है। अध्यापक शिक्षण प्रक्रिया में अत्यंत महत्वपूर्ण कड़ी है। अध्यापन प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाने के लिए अध्यापकों की शिक्षा एवं उनके प्रशिक्षण पर ध्यान देने की नितांत आवश्यकता है। अध्यापकों में गुणवत्तापूर्ण सुधार लाने हेतु सेवा पूर्व एवं सेवाकालीन अध्यापक

प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है। सेवा पूर्व अध्यापक प्रशिक्षण के माध्यम से अध्यापकों को बुनियादी ज्ञान प्रदान किया जाता है वहीं दूसरी ओर सेवाकालीन अध्यापक प्रशिक्षण के माध्यम से अध्यापकों को वर्तमान चुनौतियों से निपटने का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम एनसीईआरटी, एससीईआरटी एवं डाइट्स द्वारा संचालित किए जाते हैं। जिले स्तर पर शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने में डायट की प्रमुख भूमिका रही है। डाइट्स अध्यापक प्रशिक्षण, संसाधन सहायता,, अनुसंधान और नवाचार, निगरानी और मूल्यांकन, समुदाय और स्कूल का समन्वय, नीति क्रियान्वयन एवं व्यवसायिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। डाइट्स की भूमिका के निर्वहन हेतु डाइट्स के मानवीय संसाधन जैसे उसके अधिकारी व कर्मचारी एवं डाइट के भौतिक संसाधन सम्मिलित होते हैं। वर्तमान डिजिटल युग में सेवाकालीन प्रशिक्षण अधिक प्रासंगिक है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम उद्देश्यों के आधार पर ऑनलाइन व ऑफलाइन दोनों माध्यमों में संचालित किए जाते हैं। उत्तर प्रदेश में प्राथमिक एवं माध्यमिक अध्यापकों के व्यावसायिक उन्नयन एवं उनमें गुणवत्तापूर्ण सुधार हेतु जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा सेवाकालीन अध्यापक प्रशिक्षण का संचालन किया जाता है। इस अध्यापक प्रशिक्षण का उद्देश्य अध्यापकों की अध्यापन शैलियों में सुधार करना, नवीन शिक्षण शैलियों के उपयोग को बढ़ावा देना, अधिगम सहायक सामग्री का प्रभावपूर्ण उपयोग तथा नवीन शिक्षण तकनीकी का कक्षा कक्ष शिक्षण में उपयोग करने का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। अध्यापक प्रशिक्षण के माध्यम से अध्यापकों की अभिक्षमता में परिवर्तन आता है जैसे- शिक्षक अभिक्षमता, शिक्षण अभिवृत्ति, व्यावसायिक प्रतिबद्धता, कक्षा कक्ष प्रबंधन, रचनात्मक दृष्टिकोण, प्रेरणादायक दृष्टिकोण, आजीवन सीखने की इच्छा, धैर्य तथा सहानुभूति, अपने शिक्षण विषय से संबंधित निरंतर ज्ञान अर्जन करना एवं कक्षा कक्ष शिक्षण शैली आदि में परिवर्तन आते हैं। प्रस्तुत लेख में बेसिक शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों पर डाइट द्वारा आयोजित सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता के अध्ययन हेतु चयनित किया गया है। डाइट्स द्वारा आयोजित सेवा कालीन अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का अध्यापकों की शिक्षण अभिक्षमता एवं शिक्षण अभिवृत्ति पर पढ़ने वाले प्रभाव एवं में प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता के अध्ययन से संबंधित पूर्व में आयोजित अनुसंधान कार्यों का गहन विश्लेषण एवं संश्लेषण करते हुए निष्कर्ष प्रदान किए गए हैं।

सेवाकालीन अध्यापक प्रशिक्षण की अवधारणा-

अध्यापकों का व्यवसायिक विकास सेवा पूर्व अध्यापक शिक्षा से प्रारंभ होता है तथा सेवाकालीन अध्यापक प्रशिक्षण से उसका नवीनीकरण किया जाता है। सेवाकालीन अध्यापक प्रशिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें सेवारत अध्यापक ने पूर्व विद्यालय शिक्षा में जो कुछ सीखा है उसको स्थिरता प्रदान की जाती है तथा उनकी अभियोग्यताओं को बढ़ाने का प्रयास किया जाता है। वर्तमान युग में ज्ञान में उत्तरोत्तर वृद्धि होने से शैक्षिक संरचना, विद्यालय पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन तथा शैक्षिक तकनीकी का ज्ञान जैसी अध्यापकों की उत्तर-जीवितागत दक्षताओं में परिमार्जन सेवाकालीन अध्यापक प्रशिक्षण के द्वारा ही संभव है। इसमें वे सभी क्रियाकलाप सम्मिलित होते हैं जो शिक्षण, पाठ्यक्रम, मूल्यांकन, कक्षा संचालन एवं विद्यालय प्रशासन में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के अनुसार सेवारत अध्यापक प्रशिक्षण सेवारत अप्रशिक्षित अध्यापकों की योग्यताओं एवं व्यवसायिक दक्षता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सेवाकालीन अध्यापक प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए विभिन्न सेवाकालीन शिक्षण प्रतिमानों का निर्माण किया गया है। फेस टू फेस संस्थानिक प्रतिमान में प्रशिक्षण संस्थान में स्रोत अध्यापक/रिसोर्स पर्सन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं जिसमें 30 से 40 प्रशिक्षणार्थी व्याख्यान विधि, तर्कसंगत विधि, प्रोजेक्ट विधि एवं केस विधि के माध्यम से शैक्षिक क्षेत्र की नवीन जानकारी प्राप्त करते हैं। प्रशिक्षण के स्तारित प्रतिमान में दो या तीन स्तर की प्रशिक्षण प्रणाली में कम समय में अधिक अध्यापकों को प्रशिक्षित किया जा सकता है। प्रशिक्षण के 'माध्यम आधारित दूरस्थ शिक्षण प्रतिमान' में टेक्नोलॉजी एवं कंप्यूटर का प्रयोग प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने में किया जाता है। प्रशिक्षण के अन्य प्रतिमानों में अल्पकालीन प्रशिक्षण जैसे संगोष्ठी, सम्मेलन एवं पुनश्चार्ज कार्यक्रम 1 से 7 दिन की अवधि में ही उच्च स्तरीय जानकारी प्रदान की जाती है। ऑनलाइन प्रशिक्षण के लिए स्वयं एवं दीक्षा जैसे तकनीकी

प्लेटफार्म का उपयोग किया जा रहा है जिसका उद्देश्य है कि कम समय में अधिक अध्यापकों को मानकीकृत प्रशिक्षण प्रदान किया जा सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अध्यापकों से अपेक्षित किया गया है कि वह स्वयं व्यवसायिक विकास के लिए अपनी इच्छा से प्रत्येक वर्ष 50 घंटे का सतत व्यवसायिक विकास कार्यक्रम में हिस्सा लें।

डाइट्स द्वारा आयोजित सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता-

डाइट्स द्वारा आयोजित सेवाकालीन अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना शिक्षा व्यवस्था में गुणवत्तापूर्ण सुधार हेतु एक महत्वपूर्ण कदम है। यह कार्यक्रम प्राथमिक एवं प्रारंभिक स्तर के अध्यापकों को शिक्षाशास्त्र से संबंधित नवीन कौशलों एवं विधियों से अवगत करते हैं, जिससे अध्यापक की व्यवसायिक एवं शैक्षणिक अभिक्षमता में वृद्धि होती रहती है। लता (2014) ने दिल्ली के विभिन्न डाइट्स से प्रशिक्षण प्राप्त किये 200 अध्यापकों पर अध्ययन कर यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि प्रशिक्षण कार्यक्रम अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया को बेहतर बनाने के साथ-साथ ज्ञान को अद्यतन करने तथा शिक्षण कौशलों के परिमार्जन में भी मदद करते हैं तथा शिक्षकों का यह मत प्राप्त हुआ कि प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त हुई विषयवस्तु उपयुक्त और वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप थी तथा इससे शिक्षकों के संप्रेषण एवं आत्मविश्वास में भी वृद्धि हुई है। कुमार (2024) ने 18 डाइट्स प्रधानाचार्य, 90 रिसोर्स पर्सन एवं 360 सेवारत प्राथमिक शिक्षकों को अध्ययन में शामिल करके यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम अध्यापकों के ज्ञान कौशल को अद्यतन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं तथा विद्यालय चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाते हैं, तथा विशिष्ट कार्यक्रम जैसे आईसीटी एवं एफएलएन में उच्च भागीदारी देखी गई है। इस प्रकार देखा गया कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम सेवारत अध्यापकों पर सकारात्मक प्रभाव डाल रहे हैं। लेकिन यह भी देखा गया है कि डाइट में प्रशिक्षकों की कमी, बुनियादी ढांचे की कमी जैसे कंप्यूटर लैब एवं स्मार्ट क्लासरूम तथा व्यक्तिगत मूल्यांकन की कमी प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। समग्र रूप से देखा जाए तो यह प्रशिक्षण कार्यक्रम सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिक कक्षा परिस्थितियों से जोड़ते हैं जिससे अध्यापकों में आत्मविश्वास तथा शिक्षण के प्रति रुचि उत्पन्न होती है तथा यह विद्यालय शिक्षा व्यवस्था के लिए अत्यंत लाभकारी प्रयास है। साथ ही नियमित मूल्यांकन एवं अनुवर्तन से इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों को और भी अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

निष्कर्ष-

प्रस्तुत समीक्षा लेख में शोध समस्या से संबंधित पूर्व अनुसंधानों, शिक्षा नीतियों एवं कार्यक्रमों का गहन अध्ययन एवं विश्लेषण करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुए कि प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक उन्नयन हेतु डाइट्स प्रमुख भूमिका निभाती हैं। डाइट्स के द्वारा आयोजित सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम अध्यापकों की अभिक्षमता एवं अभिवृत्ति तथा व्यावसायिक विकास में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। डाइट्स की महत्वता को देखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में डाइट्स को उत्कृष्टता केंद्र बनाने का सुझाव दिया गया। सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से अध्यापक नवीन शिक्षण विधियों, कक्षा प्रबंधन कौशल एवं शिक्षण सामग्री का कुशलतापूर्वक उपयोग करने में दक्ष बनते हैं। साथ ही यह भी सुनिश्चित किया जाता है कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम स्थानीय जरूरतों के अनुरूप हो जिससे ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापकों को भी लाभान्वित किया जा सके। परंतु यह भी ज्ञात हुआ कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कुछ कमियां भी स्पष्ट होती हैं जिनके सुधार के लिए डाइट्स द्वारा नियमित रूप से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का मूल्यांकन, नीतिगत और व्यावहारिक सुधार किए जाए जिससे उनकी प्रभावशीलता को बढ़ाया जा सकेगा तथा इससे ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकेगा।

संदर्भ

- भट्टाचार्य जे०सी० - अध्यापक शिक्षा। अग्रवाल ग्रुप का पब्लिकेशंस।
- लाल, आर०बि० एवं कान्त, कृ०.-भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएं। आर० लाल बुक डिपो मेरठा।

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020-मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।
- शिक्षक शिक्षा प्रकोष्ठ एससीईआरटी, रायपुर। <https://scert.cg.gov.in/css2013-14/CSS2021-22/induction-dietbti/1-DIET-work-distribution-7cell.pdf>
- Concept note on empowering DIETs as "Centres of excellence". Ministry of education, Department of School Education & Literary, July, 2023. <https://share.google/QrhefHwIyeZSZd2P1>
- Kumar, S. (2024). In-service teacher education programmes of District Institutes of Education and Training in Bihar: An evaluation [Doctoral dissertation, Utkal University]. Shodhganga@INFLIBNET. <http://hdl.handle.net/10603/622429>
- Lata, S. (2014). A study of District Institute of Education and Training (DIETs) role in improving the knowledge and skill of in-service elementary school teachers. *International Journal of Current Research*, 6(12), 11159–11162. <https://www.journalcra.com/article/study-district-institute-education-and-training-diets-role-improving-knowledge-and-skill-service>

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.